19. हीरोशिमा

→ लेखक हीरानन्द वात्सयायन स० –'अज्ञेय'

→ माता - व्यंती देवी –

→ पिता हीरानंद शास्त्री –

→ जन्म –7 मार्च ई 1911o ककुशीनगर कसैया (उत्तर प्रदेश)

→ देहांत -4 Apr 1987

→ मैट्रिक –1925

→ इन्टर 1927

→ B.S.C - 1929

→ मूल निवास - (पंजाब) कर्तारपुर -

प्रमुख रचनाएँ

काव्यः- भग्नदूत, चिंता, इत्यलम, हरी घास पर छन भर, बावरा अहेरी, आँगन के पार द्वार, सदानीरा आदि।

कहानीः- विपथगा, जयदोल, ये तेरे प्रतिरूप, छोड़ा हुआ रास्ता, लौटती पगडंडियाँ आदि।

उपन्यासः- शेखरः एक जीवनी, नदी के द्विप, अपने अजनबी। यात्रा साहित्यः- अरे यायावर रहेगा याद, एक बूँद सहसा उछली।

कविता परिचय - प्रस्तुत कविता में आधुनिक सभ्यता की मानवीय विभीषिका का चित्रण किया गया है। यह कविता 'अज्ञेय' की 'सदानीरा' कविता संग्रह से संकलित है।

एक दिन सहसा सुरज निकला अरे क्षितिज पर नहीं, नगर के चौकः धूप बरसी पर अंतरिक्ष से नहीं, फटी मिट्टी से

कवि कहता है कि एक दिन सबेरे प्रकाश दिखाई पड़ा। यह प्रकाश क्षितिज से निकलते सूरज का नहीं, बल्कि शहर के मध्य में अमेरिका द्वारा गिराए गए बम का था। लोग गर्मी से जलने लगे। यह धूप की गर्मी नहीं थी। यह गर्मी बम विस्फोट से उत्सर्जित किरणों की थी। गर्मी फटी धरती की थी।

छायाएँ मानव-जन की दिशाहीन सब ओर पड़ी-वह सुरज नहीं उगा था पूरब में, वह बरसा सहसा बीचो-बीच नगर के : काल-सूर्य के रथ के पहियों के ज्यों अरे टुटकर बिखर गये हो दशों दिशा में।

कवि कहता है कि मनुष्य की छायाएँ दिशाहिन हो गई। प्रकाश छिटने लगा, लेकिन यह प्रकाश सूर्य का नहीं, बल्कि मानव के नृशंसता का था, जिसमें मानवता झुलस रही थी। कवि कहता है कि यह नगर के मध्य में मृत्यु रूपी सूर्य के टुटे हुए अरे का प्रकाश था। अतः बम फटते हि विध्वंसक पदार्थ मौत बनकर दशों दिशाओं में नाचने लगे।

कुछ छन का वह उदय-अस्त केवल एक प्रज्वलित छन की दृश्य सोख लेने वाली दो पहरी फिर ? छायाएँ मानव-जन की नहीं मिटी लंबी हो-हो कर : मानव ही सब भाप हो गये। छायाएँ तो अभी लिखी हैं। झुलसे हुए पत्थरों पर उजड़ी सड़कों की गच पर।

कवि कहता है कि बम गिरने के बाद कुछ छन में ही विनाशलीला का दृश्य मन्द पड़ने लगा। दोपहर तक सारी लीला खत्म हो गई तथा मानव शरीर भाप बनकर वातावरण में मिल गया, परन्तु यह दुर्घटना आज भी झुलसे हुए पत्थरों और उजड़ी हुई सडकों पर के रूप में निशानी है।

मानव का रचा हुआ सुरज मानव को भाप बनाकर सोख गया। पत्थर पर लिखी हुई यह जली हुई छाया मानव की साखी है।

मानव के द्वारा बनाया गया बम मानव को ही भाप में बदलकर मिटा दिया। पत्थर पर लिखी हुई वह जलती छाया अर्थात् विकृत रूप मानव के नृशंसता का गवाह है।

कविता के साथ

1.कविता के प्रथम अनुच्छेद में निकलनेवाला सूरज क्या है ? वह कैसे निकलता है ?

Ans - कविता के प्रथम अनुच्छेद में निकलनेवाला सूरज आण्विक प्रचण्ड बम का गोला था। जो क्षितिज से न निकलड़कर धरती फारकर निकलता है |

2. छात्राएँ दिशाहीन सब ओर क्यों पड़ती है। स्पष्ट करें |

Ans वह | सूर्य के उगने से जो भी बिम्ब प्रतिबिम्ब या छाया का निर्माण होता था - निशचित दिशा में होता था। लेकिन बम विस्फोट के कारण जो छाया वह दिशाहीन था। बम विस्फोट के कारण क्षत|विक्षत लाभ छाया स्वरूप में चारो दिशा में फैल गया-

3. प्रज्वलित क्षण की दोपहरी से कवि का आशय स्पष्ट करें।

Ans हिरोशिमा में -, जब बम का प्रचार हुआ तो इस धमाके से तेज प्रकाश निकला और चारों दिशा में फैल गया। हिरोशिमा के लोगों को लगा कि धीरधीरे आनेवाला - दोपहर आज क्षण में उपस्थित हो गया। बम से प्रज्वलित अग्नि एक क्षण के लिए | दोपहर का दृश्य प्रस्तुत कर दिया। वह दोपहर उसी समय गायब भी गया

4. मनुष्य की छायाँ कहाँ और क्यों पड़ी हुई है ?

Ans – मनुष्य की छाया हीरोशिमा की धरती पर चारों ओर से दिशाहीन होकर पडी हुई है टूटी फूटी सड़कों से लेकर | जहाँ तहाँ घर के दीवार पर मनुष्य की छाया मिलती है | पत्थरों पर छात्राएँ प्राप्त होती है। ये छायाँ हिरोशिमा पर अमेरिका द्वारा गिराये गए | परमाणु बम के कारण पड़ी हुई है

5. हिरोशिमा में मनुष्य की साखी के रूप में क्या पड़ी हुई है ?

Ans- आज भी हिरोशिमा में साखी के रूप में जहाँ वहाँ-'जले हुए पत्थर और दीवारे पड़ी हुई हैं। और पत्थरों पर दूरी फूटी सड़को पर, घर के दीवारों पर बाथ के निशान साथी के रूप में ह

6. व्याख्या करें :

एक दिन सहसा। सूरज निकला (क)

Ans -प्रस्तुत पंक्ति हमारे पाठ पुस्तक गोधूलि भाग -2 के काव्यखंड के हिरोशिमा पाठ से लिया गया है। इस पंक्ति के अनुसार कवि कहते हैद्वितीय विश्व युद्ध मे ,
| अमेरिका द्वारा हीरोशिमा पर गिरा बम पहला सूरज के समान था

जिसकी किरणें से लाखों मानव भाप बनकर उड़ गये चारों तरफ तबाही का मंजर था |
| जसका प्रभाव आज भी देखने को मिलता है

सुर्य के रथ के । पहियों के ज्यों अरे टूट कर बिखर गये हो। दसों दिशा में - काल (ख)

Ans -कि जब परमाणु बम शहर के बीचो ,इस पंक्ति के माध्यम से कवि कहते है - बीच गिड़ा तब सूर्य की किरणें हर दिशा में पड़नेलगी। यह सुरज नगर के चौक पर दिशाहीन रूप में हुआ था बीच अचानक बरसने लगा मानो - यह नगर के बीचों :अत |
| सूर्य के रथ के पहिये टूटकर चारों दिशा में बिखड़ गए हो

? मानव का रचा हुआ सुरज मानव को भाप बनाकर सोख गया (ग)

Ans आज के वैज् ,पंक्ति के माध्यम से कवि कहते है -ञानिक युग में लोग वैसे काम किये है। जिसमें उसको आराम, सुरक्षा एवं आर्थिक समपन्नता मिले। इसी सुरक्षा के लिए आदमी अस्त्र द्वितीय विश्वयुद्ध में :शस्त्र का निर्माण करना शुरू किया। अत –

लाखों - परमाणु का प्रयोग मानव की विकसित को दर्शाता है जो अपनी सुरक्षा हेतु लोगों की जान बड़े आसानी से ले सकता है |

Q 1. हीरोशिमा में मनुष्य की साखी के रूप में क्या है ?

उत्तर :- आज भी हिरोशिमा में साक्षी के रूप में अर्थात् प्रमाण के रूप में जहाँ-तहाँ जले हुए पत्थर, दीवारें पड़ी हुई हैं। यहाँ तक कि पत्थरों पर, टूटी-फूटी सड़कों पर, घर की दीवारों पर लाश के निशान छाया के रूप में साक्षी हैं।

Q 2. कविता के प्रथम अनुच्छेद में निकलने वाला सूरज क्या है? वह कैसे निकलता है ?

उत्तर :- कविता के प्रथम अनुच्छेद में निकलने वाला सूरज आण्विक बम का प्रचण्ड गोला है। ऐसा प्रतीत होता है कि वह क्षितिज से न निकलकर धरती फाड़कर निकलता है।

Q 3. मनुष्य की छायाएँ कहाँ और क्यों पड़ी हुई हैं ?

उत्तर :- मनुष्य की छायाएँ हिरोशिमा की धरती पर सब ओर दिशाहीन होकर पड़ी हुई हैं। जहाँ-तहाँ घर की दीवारों पर मनुष्य छायाएँ मिलती हैं। टूटी-फूटी सड़कों से लेकर पत्थरों पर छायाएँ प्राप्त होती हैं।

Q 4. प्रज्वलित क्षण की दोपहरी से कवि का आशय क्या है ?

उत्तर :- हिरोशिमा में जब बम का प्रहार हुआ तो प्रचण्ड गोलों से तेज प्रकास निकला और वह चतुर्दिक फैल गया । इस अप्रत्याशित प्रहार से हिरोशिमा के लोग हतप्रभ रह गये । उन्हें ऐसा लगा कि धीरे-धीरे आनेवाला दोपहर आज एक क्षण में ही उपस्थित हो गया ।

Q 5. छायाएँ दिशाहीन सब ओर क्यों पड़ती हैं ? स्पष्ट करें।

उत्तर :- सूर्य के उगने से जो भी बिम्ब-प्रतिबिम्ब या छाया का निर्माण होता है वे सभी निश्चित दिशा में लेकिन बम-विस्फोट से निकले हुए प्रकाश से जो छायाएँ बनती हैं वे दिशाहीन होती हैं। क्योंकि, आण्विक शक्ति से निकले हुए प्रकाश सम्पूर्ण दिशाओं में पड़ता है। उसका कोई निश्चित दिशा नहीं है। बम के प्रहार से मरने वालों की क्षत-विक्षत लाशें विभिन्न दिशाओं में जहाँ-तहाँ पड़ी हुई हैं। ये लाशें छाया-स्वरूप हैं, परन्तु चतुर्दिक फैली होने के कारण दिशाहीन छाया कही गयी है।

Q 6. अज्ञेय रचित 'हिरोशिमा' शीर्षक कविता का सारांश अपने शब्दों में लिखें।

उत्तर :- द्वितीय विश्वयुद्ध में 6 अगस्त 1945 को अमेरिका के एक बमवर्षक विमान से जापान के हिरोशिमा नगर पर अणुबम गिराया गया। इससे जान-माल की अपार क्षति हुई। 'हिरोशिमा' शीर्षक कविता की पृष्ठभूमि यही है। कवि कहता है कि नगर के चौक पर एक दिन सहसा सूरज निकला। यह सूरज प्रकृति का सूरज नहीं था, मानव निर्मित अणुबम के विस्फोट से उत्पन्न सूरज था। इस सूरज की धूप आकाश से नहीं, अपितु मिट्टी के फटने से चारों ओर बरसी। प्रकृति का सूरज तो पूरब में उगता है, पर मानव निर्मित यह सूरज नगर के बीच सहसा उदित हुआ। इस अणुबम रूपी सूरज कके उदित होने से मानव-जन की छायाएँ दिशाहीन सब ओर पड़ी। काल-सूर्य के रथ के पहियों के

अरे जैसे टूटकर चारों ओर बिखर गए हों। यह मानव निर्मित सूर्य कुछ ही क्षणों के अपने उदय-अस्त से सारी मानवता को विध्वस्त कर गया। इस सूर्य का उदित होना, दोपहरी की प्रचंड गर्मी का आक्रमण और फिर सूर्य का अस्त हो जानाये सारी स्थितियाँ - जन वाष्प -कुछ ही क्षणों में घटित हो गई। उस सूर्य के उदित होते ही सारे मानव बनकर इस दुनिया से दूर चले गए। आज भी उनकी छायाएँ झुलसे हुए पत्थरों और जन विनष्ट-उजड़ी हुई सड़कों की गच पर पड़ी हुई हैं। सारे मानव हो गए। उनकी पत्थरों पर पड़ी हुई छायाएँ उनकी साक्षी हैं। साक्षी हैं छायाएँ कि कभी यहाँ भी इनसान रहते थे। साक्षी हैं ये छायाएँ कि इनसान इतना निर्दय हो सकता है कि इनसान को मिटाने में उसे थोड़ी भी हिचक नहीं होती।

यह कविता भौतिकवादी और साम्राज्यवादी मानव की दृष्टि के विरोध में एक तीखा व्यंग्य लेकर उपस्थित होती है। यह कविता युद्ध और शांति की समस्या से मुठभेड़ करती है और हमारे भीतर यथार्थ चित्रण से करुणा का स्त्रोत प्रवाहित करती है। यह अज्ञेय की सफलतम रचनाओं में एक है।

Q 7: आज के युग में इस कविता की प्रासंगिकता स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :- यह स्पष्ट है कि 'अज्ञेय' प्रयोगवादी कविता का महान प्रवर्तक हैं। इनकी कविता यथार्थ की धरातल पर एक ऐसा अमिट चित्र छोड़ता है, जो माननीय संवेदनाओं को झकझोर देता है। 'हिरोशिमा' नामक कविता वर्तमान की प्रासंगिकता पर पूर्ण रूप से आधारित है। यह कविता आधुनिक संभ्यता की दुर्दान्त मानवीय विभीषिका का चित्रण करने वाली एक अनिवार्य प्रासंगिक चेतावनी भी है। यदि मानव प्रकृति से खिलवाड़ करना बाज नहीं आया तो प्रकृति ऐसी विनाशलीला खडा करेगा, जहाँ मानवीय बुद्धि की परिपक्वता छिन्न-भिन्न होकर बिखर जायेगी । हीरोशिमा में बम विस्फोट का परिणाम इतना भयावह होगा इसकी कल्पना शायद उस दुर्दान्त मानव को

भी नहीं होगा जिसने इसका प्रयोग किया। अत: यह कविता केवल अतीत की भीषणतम मानवीय दुर्घटना का ही साक्ष्य नहीं है बल्कि आण्विक आयुधों की होड़ में फंसी आज की वैश्विक राजनीति से उपजते संकट की आशंकाओं से भी जुड़ी हुई है।

Q 8. "काल-सूर्य के रथ के / पहियों के ज्यों अरे टूट कर / बिखर गये हों / दसों दिशा में' की व्याख्या कीजिए।

उत्तर :- प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक हिन्दी साहित्य के महान प्रयोगवादीकवि अज्ञेय के द्वारा लिखित 'हिरोशिमा' नामक शीर्षक से उद्धत है । प्रस्तुत अंश में यह कहा जा रहा है कि हिरोशिमा में बम का विस्फोट होना एक नहीं अनेक सूर्य के शक्ति के बराबर ज्वाला उगला था। इस व्याख्येय अंश में कहा जा रहा है कि हिरोशिमा में आण्विक आयुध का प्रयोग इतिहास का अमिट काला कलंक है । आण्विक विस्फोट की स्थिति ठीक उसी प्रकार लग रही थी जैसे महाकालरूपी सूर्य के रथ का पहिया टूटकर दसों दिशाओं में बिखर गया है। जहाँ-तहाँ पड़ी हुई लाशें सूर्यरूपी महाकाल के टूटी हुई पहियों के रूप में मानवीय संवेदनाओं को झकझोर दिया था ।

Q 9. "एक दिन सहसा/सूरज निकला' की व्याख्या कीजिए।

उत्तर :- प्रस्तुत पद्यांश हिन्दी प्रयोगवादी विचारधारा के महान प्रवर्तक कवि अज्ञेय द्वारा लिखित 'हिरोशिमा' नामक शीर्षक से अवतरित है। प्रस्तुत अंश में हिरोशिमा में हुए बम विस्फोट के बाद दुष्परिणाम का जो अंश उपस्थित हुआ है उसी का मार्मिक चित्रण है। कवि कहना चाहते हैं कि जब हिरोशिमा में आण्विक आयुध का प्रयोग हुआ उस समय प्रकृति के शाश्वत तत्त्व भी कुंठित हो गये । सूरज जैसा ब्रह्माण्ड का शक्ति सम्पन्न तत्त्व भी अपनी प्रचण्डता को झुठला दिया । बम विस्फोट से निकलने वाली ज्वाला प्रकृति

के सूरज को भी कई दिनों तक उगने से अवरुद्ध कर दिया। जबकि प्रकृति का सूरज अंतरिक्ष से निकलता है लेकिन बमरूपी सूरज धरती को फोड़कर केवल हिरोशिमा के चौक से निकला । प्रकृति का सूरज़ प्राणदाता के रूप में अवतरित होता है लेकिन आण्विक सूरज प्राण लेने वाला सूरज के रूप में निकला है।

Q 10. 'मानव का रचा हुआ सूरज/मानव को भाप बनाकर सोख गया' की व्याख्या कीजिए।

उत्तर :- प्रस्तुत पद्यांश हिन्दी साहित्य के प्रयोगवादी कवि तथा बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न कवि 'अज्ञेय' के द्वारा लिखित 'हिरोशिमा' नामक शीर्षक से उद्धृत है । प्रस्तुत अंश में हिरोशिमा पर आण्विक अस्त्र का प्रयोग कितना भयानक रहा, इसी का चित्रण यहाँ किया गया है । प्रस्तुत व्याख्येय अंश में कहा जा रहा है कि मानव जो अपने आपको प्रबुद्ध वर्ग की संज्ञा देता है वही कभी-कभी अपने बनाये गये जाल में स्वयं उलझकर रह जाता है। प्रकृति पर नियंत्रण करने का होड़ मानव की बचपना स्पष्ट दिखाई पड़ने लगती है । यही स्थिति हिरोशिमा पर बम विस्फोट के बाद देखने को मिली। मानव ने बमरूपी सूरज का निर्माण कर अपने-आपको ब्रह्माण्ड का
नियामक समझ लिया था, लेकिन वह विस्फोट मानव को ही भाप बनाकर सोख – लिया, अर्थात् वही विस्फोट मानव के लिए अभिशाप बन गया।

7. हीरोशिमा

1. उगते हुए सूरज का देश किसे कहा जाता है?

(A) भारत को

(B) श्रीलंका को

(C) भूटान को

(D) जापान को

ANS – (D)

2. 'हिरोशिमा' कविता के कवि हैं-

(A) प्रेमघन

(C) अज्ञेय

(B) पंत

(D) दिनकर

ANS – (C)

3. अज्ञेय एक प्रमुख कवि के साथ-साथ थे-

(A) कथाकार

(C) पत्रकार

(B) विचारक

(D) उपर्युक्त सभी

ANS – (D)

4. अज्ञेय किस काल के प्रमुख कवि हैं?

(A) आदिकाल

(C) रीतिकाल

(B) भक्तिकाल

(D) आधुनिक काल

ANS – (D)

5. अज्ञेय को हिन्दी के साथ-साथ किस भाषा का ज्ञान था?

(A) संस्कृत

(B) अंग्रेजी

(C) फारसी

(D) उपर्युक्त सभी

ANS – (D)

6. 'हिरोशिमा' अज्ञेय के किस काव्य से संकलित है?

(A) सदानीरा

(B) भग्नदूत

(C) चिंता

(D) कितनी नावों में कितनी बार

ANS – (A)

7. 'अज्ञेय' का पूरा नाम है-

(A) सच्चिदानंद 'अज्ञेय'

(B) वात्स्यायन 'अज्ञेय'

(C) हीरानंद 'अज्ञेय'

(D) सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'

ANS – (D)

8. अज्ञेय का जन्म कब हुआ?

(A) 1910 ई०

(B) 1911 ई०

(C) 1912 ई०

(D) 1913 ई०

ANS – (B)

9. अज्ञेय का जन्म कहाँ हुआ था?

(A) बदरघाट, पटना

(B) बलिया, उत्तरप्रदेश

(C) अमरावती, महाराष्ट्र

(D) कसेया, कुशीनगर, उत्तरप्रदेश

ANS – (D)

10. अज्ञेय के पिता थे

(A) रवि सिंह

(B) गंगादत्त पंत

(C) डॉ० हीरानंद शास्त्री

(D) कालूचंद खत्री

ANS – (C)

11. अज्ञेय का मूल निवास कहाँ था?

(A) उत्तर प्रदेश

(B) कर्तारपुर पंजाब

(C) महाराष्ट्र

(D) उत्तराखंड

ANS – (B)

12. कवि की दृष्टि में किसका रचा हुआ सूरज मानव को भाप बनाकर सोख गया?

(A) प्रकृति का

(B) ईश्वर का

(C) मानव का

(D) दानव का

ANS – (C)

13. 'हिरोशिमा' कविता किसका चित्रण करती है?

(A) प्राचीन सभ्यता की खुशहाली का

(B) आधुनिक सभ्यता के विकास का

(C) प्राचीन सभ्यता की मानवीय विभीषिका का

(D) आधुनिक सभ्यता की दुर्दात मानवीय विभीषिका का

ANS – (D)

14. दुर्दान्त मानवीय विभीषिका का चित्रण करने वाली कविता है

(A) एक वृक्ष की हत्या

(B) अक्षर ज्ञान

(C) हिरोशिमा

(D) जनतंत्र का जन्म

ANS – (C)

15. 'तार-सप्तक' का संपादन किया

(A) जयशंकर प्रसाद ने

(B) महादेवी वर्मा ने

(C) राम इकबाल सिंह 'राकेश' ने

(D) 'अज्ञेय' ने

ANS – (D)

10. हिन्दी कविता में प्रयोगवाद का सूत्रपात किया-

(A) महादेवी वर्मा ने

(B) राम इकबाल सिंह 'राकेश' ने

(C) दिनकर ने

(D) 'अज्ञेय' ने

ANS – (D)

17. द्वितीय विश्वयुद्ध में परमाणु बम

गिराया गया।

(A) जापान

(C) रूस

(B) फ्रांस

(D) चीन

ANS – (A)

18. अज्ञेय को कौन-सा पुरस्कार मिला था?

(A) साहित्य अकादमी

(B) ज्ञानपीठ

(C) अंतर्राष्ट्रीय स्वर्णमाला

(D) उपर्युक्त सभी

ANS – (D)

19. काव्य संग्रह 'सदानीरा' किनकी रचना है?

(A) अज्ञेय

(B) कुँवर नारायण

(C) वीरेन डंगवाल

(D) अनामिका

ANS – (A)

20. अज्ञेय के अनुसार एक दिन सहसा सूरज कहाँ निकला?

(A) क्षितिज पर

(B) नगर के चौक पर

(C) पूरब में

(D) पश्चिम में

ANS – (B)

21. आधुनिक साहित्य में एक प्रमुख प्रतिभा थे-

(A) स० ही० वात्स्यायन अज्ञेय

(B) रहीम

(C) कबीर

(D) सुमित्रानंदन पंत

ANS – (A)

22. 'अज्ञेय' किस काव्य-धारा के कवि हैं?

(A) छायावाद

(B) प्रयोगवाद

(C) रहस्यवाद

(D) प्रगतिवाद

ANS – (B)

23. हिरोशिमा किस देश में है?

(A) चीन

(C) जापान

(B) फ्रांस

(D) जर्मनी

ANS – (C)

24. 'तार सप्तक' के सम्पादक थे प्रयोगवादी कवि

(A) सूरदास

(B) केशवदास

(C) तुलसीदास

(D) अज्ञेय

ANS – (D)

25. जापान पर परमाणु बम गिराया-

(A) इंग्लैंड ने

(B) अमेरिका ने

(C) चीन ने

(D) रूस ने

ANS – (B)

26. अज्ञेय के पिता डॉ० हीरानंद शास्त्री थे-

(A) प्रख्यात पुरातत्वेत्ता

(B) राजनेता

(C) लेखक

(D) कलाकार

ANS – (A)

27. 'शेखर: एक जीवनी' किनका उपन्यास है?

(A) रामधारी सिंह 'दिनकर'

(B) आचार्य हजारी प्रसाद 'द्विवेदी'

(C) अज्ञेय

(D) कुँवर नारायण

ANS – (C)

28. इनमें कौन-सा काव्य संग्रह अज्ञेय का है?

(A) ग्राम्या

(B) जीर्ण जनपद

(C) सदानीरा

(D) इन दिनों

ANS – (C)

29. मानव का रचा हुआ सूरज मानव को भाप बना कर सोख गया। प्रस्तुत पंक्तियाँ किस कविता की है?

(A) एक वृक्ष की हत्या

(B) हिरोशिमा

(C) जनतंत्र का जन्म

(D) हमारी नींद

ANS – (B)

30. एक दिन सहसा सूरज निकला अरे क्षितिज पर नहीं, नगर के चौक,

प्रस्तुत काव्यांश किस कविता की है?

(A) अक्षर ज्ञान

(B) हमारी नींद

(C) लौटकर आऊँगा

(D) हिरोशिमा

ANS – (D)

31. 'नदी के द्वीप' किस कवि की रचना है?

(A) रामधारी सिंह दिनकर

(B) सुमित्रानंदन पंत

(C) कुँवर नारायण

(D) सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन '

ANS – (D)